तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी — वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ — प्रयोजन - भावना

प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥

अर्थ - [नैगम] नैगम [संग्रह] संग्रह [व्यवहार] व्यवहार [ऋजुसूत्र] ऋजुसूत्र [शब्द] शब्द [समभिरूढ] समभिरूढ़ [एवंभूता] एवंभूत - यह सात [नयाः] नय [Viewpoints] हैं।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - नैगमनय का स्वरूप

- जो भूतकाल की पर्याय में वर्तमानवत् सङ्कल्प करे अथवा
- भविष्य की पर्याय में वर्तमानवत् सङ्कल्प करे तथा
- वर्तमान पर्याय में कुछ निष्पन्न (प्रगटरूप) है और कुछ निष्पन्न नहीं है, उसका निष्पन्नरूप सङ्कल्प करे,
- उस ज्ञान को तथा वचन को नैगमनय कहते हैं। [Figurative]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - संग्रहनय का स्वरूप

- जो समस्त वस्तुओं को तथा समस्त पर्यायों को संग्रहरूप करके जानता है तथा कहता है, सो संग्रहनय है।
- जैसे सत् द्रव्य, इत्यादि [General, Common]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - व्यवहारनय का स्वरूप

- अनेक प्रकार के भेद करके व्यवहार करे या भेदे, सो व्यवहारनय है।
- जो संग्रहनय के द्वारा ग्रहण किए हुए पदार्थ को विधिपूर्वक भेद करे, सो व्यवहार है।
- जैसे सत् के दो प्रकार हैं - द्रव्य और गुण।
- द्रव्य के छह भेद हैं - जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।
- गुण के दो भेद हैं - सामान्य और विशेष।
- इस प्रकार जहाँ तक भेद हो सकते हैं, वहाँ तक यह नय प्रवृत्त होता है।
- [Distributive]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - ऋजुसूत्रनय का स्वरूप

- [ऋजु अर्थात् वर्तमान, उपस्थित, सरल] जो ज्ञान का अंश वर्तमान पर्याय मात्र को ग्रहण करे, सो ऋजुसूत्रनय है।
- [Present condition]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - शब्दनय का स्वरूप

- जो नय लिङ्ग, संख्या, कारक आदि के व्यभिचार को दूर करता है, सो शब्दनय है।
- यह नय लिङ्गादि के भेद से पदार्थ को भेदरूप ग्रहण करता है;
- जैसे दार (पु०) भार्या (स्त्री) कलत्र (न०), यह दार, भार्या और कलत्र तीनों शब्द भिन्न लिङ्गवाले होने से यद्यपि एक ही पदार्थ के वाचक हैं, तथापि यह नय स्त्री पदार्थ को लिङ्ग के भेद से तीन भेदरूप जानता है। [Descriptive]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - समभिरूढ़नय का स्वरूप

- जो भिन्न-भिन्न अर्थों का उल्लंघन करके एक अर्थ को रूढ़ि से ग्रहण करे। जैसे गाय [Usage]
- जो पर्याय के भेद से अर्थ को भेदरूप ग्रहण करे। जैसे इन्द्र, शक्र, पुरन्दर; यह तीनों शब्द इन्द्र के नाम हैं, किन्तु यह नय तीनों का भिन्न-भिन्न अर्थ करता है। [Specific]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - एवंभूतनय का स्वरूप

- जिस शब्द का जिस क्रियारूप अर्थ है, उस क्रियारूप परिणमित होनेवाले पदार्थ को जो नय ग्रहण करता है, उसे एवंभूतनय कहते हैं।
- जैसे पुजारी को पूजा करते समय ही पुजारी कहना। [Active]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३ ३ ॥ - द्रव्य का स्वरूप

- द्रव्य नाम वस्तुओं का भी है और वस्तुओं के सामान्यस्वभावमय एक स्वभाव का भी है।
- जब द्रव्य प्रमाण का विषय होता है, तब उसका अर्थ वस्तु (द्रव्य-गुण और तीनों काल की पर्याय सहित) करना चाहिए।
- जब नयों के प्रकरण में द्रव्यार्थिक का प्रयोग होता है तब 'सामान्यस्वभावमय एक स्वभाव' (सामान्यात्मक धर्म) अर्थ करना चाहिए।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - पर्याय का स्वरूप

- पर्याय के दो भेद हैं—(१) सहभावी - जिसे गुण कहते हैं, (२) क्रमभावी - जिसे पर्याय कहते हैं।
- जब नयों के प्रकरण में पर्यायार्थिक का प्रयोग होता है तब 'विशेषस्वभावमय एक स्वभाव' (विशेषात्मक धर्म) अर्थ करना चाहिए।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - वर्गीकरण

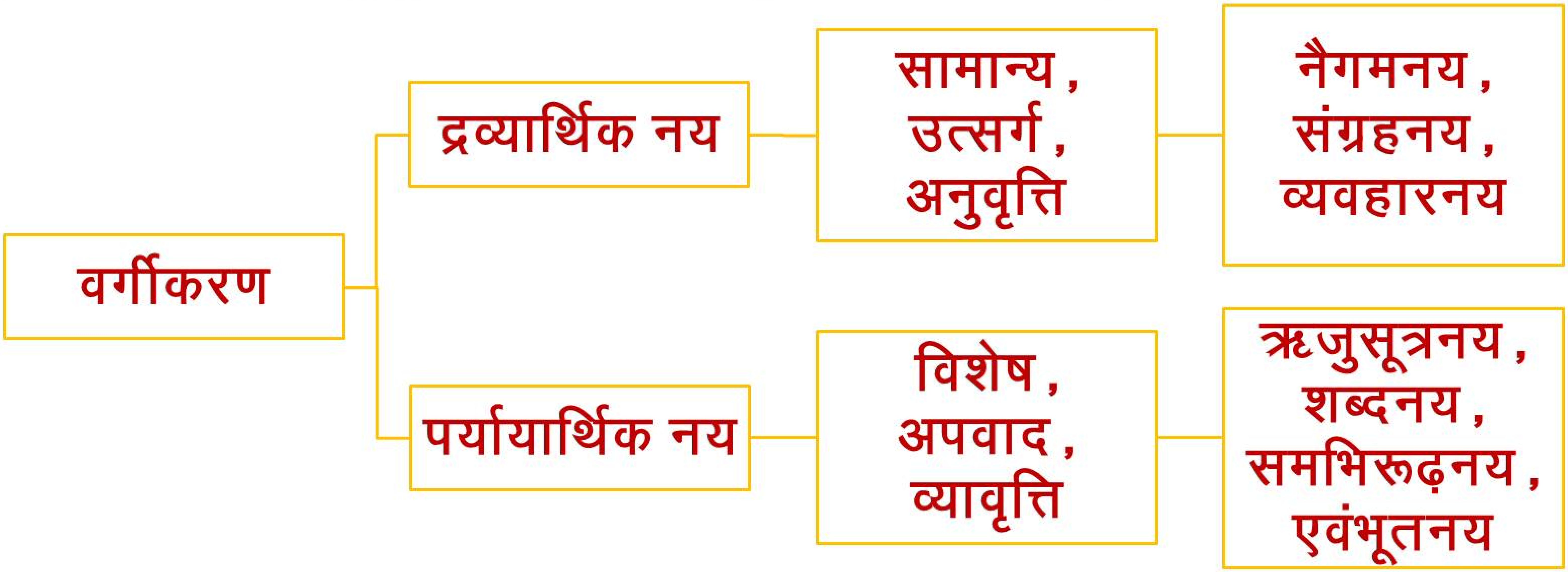

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - द्रव्यार्थिकनय के भेद

- द्रव्यार्थिकनय में निम्न प्रकार तीन भेद होते हैं—

  १- सत् और असत् पर्याय के स्वरूप में प्रयोजनवश परस्पर भेद न मानकर दोनों को वस्तु का स्वरूप मानना, सो नैगमनय है।

  २- सत् के अन्तर्भेदों में भेद न मानना, सो संग्रहनय है।

  ३- सत् में अन्तर्भेदों का मानना, सो व्यवहारनय है।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - पर्यायार्थिकनय के भेद

- पर्यायार्थिकनय में निम्न प्रकार चार भेद होते हैं—

१- सत् के वर्तमान पर्याय मात्र अंश को ग्रहण करे, सो ऋजुसूत्रनय है।

२- सत् सम्बन्धी लिङ्ग, संख्या, कारक आदि के व्यभिचार को दूर करता है, सो शब्दनय है।

३- सत् पर्याय के भेद से अर्थ को भेदरूप ग्रहण करे, सो समभिरूढ़ नय है।

४- सत् क्रियारूप परिणमित होनेवाले पदार्थ को जो नय ग्रहण करता है, उसे एवंभूतनय कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - नय के प्रकार

- नय के ज्ञाननय, शब्दनय और अर्थ (धर्म) नय – ऐसे भी तीन प्रकार होते हैं।

(१) वास्तविक प्रमाणज्ञान है और जब वह एकदेशग्राही होता है, तब उसे नय कहते हैं, इसलिए ज्ञान का नाम नय है और उसे ज्ञाननय कहा जाता है।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - नय के प्रकार

(२) ज्ञान के द्वारा जाने गये पदार्थ का प्रतिपादन शब्द के द्वारा होता है, इसलिए उस शब्द को शब्दनय कहते हैं।

(३) ज्ञान का विषय पदार्थ है, इसलिए नय से प्रतिपादित किये जानेवाले पदार्थ को भी नय कहते हैं, यह अर्थनय है।

(श्री स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा २६४-२६५, पृष्ठ १८९-१९०, संस्कृत टीका एवं हिन्दी टीका, श्रीमद् राजचन्द्र शास्त्रमाला)

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - नय के प्रकार

- **नय के प्रकार**
  - **ज्ञाननय** – नैगमनय
  - **अर्थनय** – नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहारनय, ऋजुसूत्रनय
  - **शब्दनय** – शब्दनय, समभिरूढ़नय, एवंभूतनय

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

आत्मा के सम्बन्ध में इन सात नयों को श्रीमद् राजचन्द्रजी ने निम्नलिखित चौदह प्रकार से अवतरित किए हैं। वे साधक को उपयोगी होने से यहाँ अर्थ सहित दिए जाते हैं।

१- एवंभूतदृष्टि से ऋजुसूत्र स्थिति कर = पूर्णता के लक्ष्य से प्रार भ कर।

२- ऋजुसूत्रदृष्टि से एवंभूत स्थिति कर = साधकदृष्टि के द्वारा साध्य में स्थिति कर।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

३- नैगमदृष्टि से एवंभूत प्राप्त कर = तू पूर्ण है—ऐसी सङ्कल्पदृष्टि से पूर्णता को प्राप्त कर।

४- एवंभूतदृष्टि से नैगम विशुद्ध कर = पूर्णदृष्टि से अव्यक्त अंश विशुद्ध कर।

५- संग्रहदृष्टि से एवंभूत हो = त्रैकालिक सतदृष्टि से पूर्ण शुद्धपर्याय प्रगट कर।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

प्रगट कर।

६- एवंभूतदृष्टि से संग्रह विशुद्ध कर = निश्चयदृष्टि से सत्ता को विशुद्ध कर।

७- व्यवहारदृष्टि से एवंभूत के प्रति जा = भेददृष्टि छोड़कर अभेद के प्रति जा।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

८- एवंभूतदृष्टि से व्यवहार निवृत्ति कर = अभेददृष्टि से भेद को निवृत्त कर।

९- शब्ददृष्टि से एवंभूत के प्रति जा = शब्द के रहस्यभूत पदार्थ की दृष्टि से पूर्णता के प्रति जा।

१०- एवंभूतदृष्टि से शब्द निर्विकल्प कर = निश्चयदृष्टि से शब्द के रहस्यभूत पदार्थ में निर्विकल्प हो।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

११- समभिरूढ़दृष्टि से एवंभूत को देख = साधक अवस्था के आरूढ़भाव से निश्चय को देख।

१२- एवंभूतदृष्टि से समभिरूढ़ स्थिति कर = निश्चयदृष्टि से समस्वभाव के प्रति आरूढ़ स्थिति कर।

१३- एवंभूतदृष्टि से एवंभूत हो = निश्चयदृष्टि से निश्चयरूप हो।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

१४- एवंभूत स्थिति से एवंभूतदृष्टि को शमित कर = निश्चय स्थिति से निश्चयदृष्टि के विकल्प को शमित कर दे।

वास्तविक भाव लौकिक भावों से विरुद्ध होते हैं

प्रश्न - यदि व्यवहारनय से अर्थात् व्याकरण के अनुसार जो प्रयोग (अर्थ) होता है, उसे आप शब्दनय से दूषित कहेंगे तो लोक और शास्त्र में विरोध आएगा।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

उत्तर - लोक न समझें इसलिए विरोध भले करें, यहाँ यथार्थ स्वरूप (तत्त्व) का विचार किया जा रहा है - परीक्षा की जा रही है। औषधि रोगी की इच्छानुसार नहीं होती। [सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ५३४] जगत रोगी है, ज्ञानीजन उसी के अनुकूल (रुचिकर) तत्त्व का स्वरूप (औषधि) नहीं कहते, किन्तु वे वही कहते हैं जो यथार्थ स्वरूप होता है ॥३३ ॥

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

पाँच प्रकार से जैनशास्त्रों के अर्थ समझने की रीति

प्रत्येक वाक्य का पाँच प्रकार से अर्थ करना चाहिए—

शब्दार्थ, नयार्थ, मतार्थ, आगमार्थ और भावार्थ।

'परमात्मा को नमस्कार' इस वाक्य का यहाँ पाँच प्रकार से अर्थ किया जाता है—

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

(१) **शब्दार्थ** - 'जो ध्यानरूपी अग्नि के द्वारा कर्मकलङ्क को भस्म करके शुद्ध नित्य निरञ्जन ज्ञानमय हुए हैं, उन परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ।' यह परमात्मा को नमस्कार का शब्दार्थ हुआ।

(२) **नयार्थ** - शुद्ध निश्चयनय से आत्मा परमानन्दस्वरूप है। पूर्णशुद्धता प्रगट हुई, वह सद्भूत व्यवहारनय का विषय है। कर्म दूर

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

हुए, वह असद्भूत अनुपचरित व्यवहारनय का विषय है। इस प्रकार प्रत्येक स्थान पर नय से समझना चाहिए। यदि नयों के अभिप्राय को न समझे तो वास्तविक अर्थ समझ में नहीं आता। यथार्थ ज्ञान में साधक के सुनय होते ही हैं।

'ज्ञानावरणीय कर्म ने ज्ञान को रोका' - ऐसा वाक्य हो, वहाँ

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३ ३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

'ज्ञानावरणीय नाम का जड़ कर्म ज्ञान को रोकता है', ऐसा कहना दो द्रव्यों का सम्बन्ध बतलानेवाला व्यवहारनय का कथन है, सत्यार्थ नहीं है।

शास्त्रों के सच्चे रहस्य को खोलने के लिये नयार्थ होना चाहिए। नयार्थ को समझे बिना चरणानुयोग का कथन भी समझ में नहीं आता। जहाँ

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

गुरु का उपकार मानने का कथन आए, वहाँ समझना चाहिए कि गुरु परद्रव्य है, इसलिए वह व्यवहार का कथन है और वह असद्भूत-उपचरित व्यवहारनय है। परमात्मप्रकाश गाथा ७ तथा १४ के अर्थ में बताया गया है कि असद्भूत का अर्थ 'मिथ्या' होता है।

चरणानुयोग में जहाँ परद्रव्य छोड़ने की बात आए, वहाँ समझना चाहिए

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

कि वहाँ राग को छुड़ाने के लिए व्यवहारनय का कथन है। प्रवचनसार में शुद्धता और शुभराग की मित्रता कही है, किन्तु वास्तव में वहाँ उनके 'मित्रता' नहीं है, राग तो शुद्धता का शत्रु ही है, किन्तु चरणानुयोग के शास्त्र में वैसा कहने की पद्धति है और वह व्यवहारनय का कथन है। अशुभ से बचने के लिए शुभराग निमित्तमात्र मित्र कहा है। उसका

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

भावार्थ तो यह है कि वह वास्तव में वीतरागता का शत्रु है, किन्तु निमित्त बताने के लिये व्यवहारनय द्वारा ऐसा ही कथन होता है।

(३) मतार्थ – दूसरे विरुद्ध मत किस प्रकार से मिथ्या हैं, उसका वर्णन करना, सो मतार्थ है। चरणानुयोग में कहे हुए व्यवहारव्रतादि करने से धर्म हो, ऐसी मान्यतावाले अन्यमत हैं; जैनमत नहीं है।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने भावपाहुड़ गाथा ८३ में कहा है कि 'पूजादिक में और व्रतादि सहित होय सो तो पुण्य है और मोह–क्षोभ रहित आत्मा का परिणाम, सो धर्म है। लौकिक जन–अन्यमति कई कहै हैं जो पूजा आदिक शुभ क्रिया में और व्रतक्रिया सहित है, सो जिनधर्म है, सो ऐसे नहीं है।'

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

यहाँ बौद्ध, वेदान्त, नैयायिक इत्यादि में जो एकान्त मान्यता है और जिनमत में रहनेवाले जीव में भी जिस प्रकार की विपरीत-एकान्त-मान्यता चल रही हो, वह भूल बताकर उस भूलरहित सच्चा अभिप्राय बतलाना, सो मतार्थ है।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नया: ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

(५) **आगमार्थ** – जो सत् शास्त्र में (सिद्धान्त में) कहा हो, उसके साथ अर्थ को मिलाना, सो आगमार्थ है। सिद्धान्त में जो अर्थ प्रसिद्ध हो, वह आगमार्थ है।

(६) **भावार्थ** – तात्पर्य अर्थात् इस कथन का अन्तिम अभिप्राय–सार क्या है ? कि परमात्मारूप वीतरागी त्रिकाली आत्मद्रव्य ही उपादेय है,

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

इसके अतिरिक्त कोई निमित्त या किसी प्रकार का राग–विकल्प उपादेय नहीं है। यह सब तो मात्र जाननेयोग्य है, एक परमशुद्ध स्वभाव ही आदरणीय है। भावनमस्काररूप पर्याय भी निश्चय से आदरणीय नहीं है, इस प्रकार परम शुद्धात्मस्वभाव को ही उपादेयरूप से अङ्गीकार करना, सो भावार्थ है।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

यह पाँच प्रकार से शास्त्रों का अर्थ करने की बात समयसार, पञ्चास्तिकाय, वृहद द्रव्यसंग्रह, परमात्मप्रकाश की टीका में है।

यदि किसी शास्त्र में यह न कही हो तो भी प्रत्येक शास्त्र के प्रत्येक कथन में इन पाँच प्रकार से अर्थ करके उसका भाव समझना चाहिए।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

नय का स्वरूप संक्षेप में निम्न प्रकार है—

सम्यग्नय सम्यक् श्रुतज्ञान का अवयव है और इससे वह परमार्थ से ज्ञान का (उपयोगात्मक) अंश है और उसके शब्दरूप कथन को मात्र उपचार से नय कहा है।

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

इस विषय में श्री धवला टीका में कहा है कि

शङ्का – नय किसे कहते हैं ?

समाधान – ज्ञाता के अभिप्राय को नय कहते हैं।

शङ्का – 'अभिप्राय' का क्या अर्थ है ?

समाधान – प्रमाण से गृहीत वस्तु के एकदेश में वस्तु का निश्चय ही

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

अभिप्राय है।

युक्ति अर्थात् प्रमाण से अर्थ के ग्रहण करने अथवा द्रव्य और पर्याय में से किसी एक को अर्थरूप से ग्रहण करने का नाम नय है। प्रमाण से जानी हुई वस्तु के द्रव्य अथवा पर्याय में वस्तु के निश्चय करने को नय कहते हैं, यह इसका अभिप्राय है। *(धवला टीका पुस्तक ६, पृष्ठ १६२-१६३)*

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

'प्रमाण और नय से वस्तु का ज्ञान होता है, इस सूत्र द्वारा भी यह व्या यान विरुद्ध नहीं पड़ता, इसका कारण यह है कि प्रमाण और नय से उत्पन्न वाक्य भी उपचार से प्रमाण और नय है।'

(धवला टीका पुस्तक ६, पृष्ठ १६४)

[यहाँ श्री वीरसेनाचार्य ने वाक्य को उपचार से नय कहकर ज्ञानात्मक नय को परमार्थ से नय कहा है।]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

पञ्चाध्यायी में भी नय के दो प्रकार माने हैं—

द्रव्यनयो भावनयः स्यादिति भेदाद्द्विधा च सोऽपि यथा।

पौद्गलिकः किल शब्दो द्रव्यं भावश्च चिदिति जीवगुणः ॥५०५॥

अर्थ - 'वह नय भी द्रव्यनय और भावनय इस प्रकार के भेद से दो प्रकार का है। जैसे कि वास्तव में पौद्गलिक शब्द द्रव्यनय कहलाता है

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

तथा जीव का गुण जो चैतन्य है, वह भावनय कहलाता है अर्थात् नय ज्ञानात्मक और वचनात्मक के भेद से दो प्रकार का है। उनमें वचनात्मक नय द्रव्यनय तथा ज्ञानात्मक नय भावनय कहलाता है।'

स्वामी कार्तिकेय विरचित द्वादशानुप्रेक्षा में नय के तीन प्रकार कहे हैं। अब वस्तु के धर्म को, उसके वाचक शब्द को और उसके ज्ञान को नय

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

कहते हैं—

‘सो चिय इक्को ध मो, वाचय सद्दो वि तस्स ध मस्स।
तं जाणदि तं णाणं, ते तिण्णि वि णय विसेसा य॥२६५ ॥’

अर्थ - जो वस्तु का एक धर्म, उस धर्म का वाचक शब्द और उस धर्म को जाननेवाला ज्ञान, ये तीनों ही नय के विशेष हैं।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

भावार्थ – वस्तु का ग्राहक ज्ञान, उसका वाचक शब्द और वस्तु, इनको जैसे प्रमाणस्वरूप कहते हैं, वैसे ही नय भी कहते हैं।

(पाटनी ग्रन्थमाला से प्र० कार्तिकेयानुप्रेक्षा, पृष्ठ १७०)

'सुयणाणस्स, वियप्पो, सो वि णओ' श्रुतज्ञान के विकल्प (भेद) को नय कहा है। *(कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा २६३)*

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

जैन नीति अथवा नय-विवक्षा

एकेनाकर्षन्ती श्लथयन्ती वस्तु तत्त्वमितरेण।
अन्तेन जयति जैनी नीतिर्मन्थाननेत्रमिव गोपी ॥२२५ ॥

(पुरुषार्थसिद्ध्युपाय)

अर्थ – मथानी को खींचनेवाली ग्वालिन की तरह जिनेन्द्र भगवान की

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नया: ॥ ३ ३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

जो नीति अर्थात् नय–विवक्षा है, वह वस्तुस्वरूप को एक नय–विवक्षा से खींचती हुई तथा दूसरी नय–विवक्षा से ढीली करती हुई अन्त अर्थात् दोनों विवक्षाओं से जयवन्त रहे।

भावार्थ – भगवान् की वाणी स्याद्वादरूप अनेकान्तात्मक है। वस्तु का स्वरूप मुख्य तथा गौण नय की विवक्षा से ग्रहण किया जाता

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

है। जैसे जीवद्रव्य नित्य भी है और अनित्य भी है, द्रव्यार्थिकनय की विवक्षा से नित्य है तथा पर्यायार्थिकनय की विवक्षा से अनित्य है। यही नय-विवक्षा है। *(जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता से प्रकाशित श्री अमृतचन्द्राचार्यकृत पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय, पृष्ठ १२३)*

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

यह श्लोक सूचित करता है कि शास्त्र में कहीं पर निश्चयनय की मुख्यता से कथन है और कहीं पर व्यवहारनय की मुख्यता से कथन है, परन्तु उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि धर्म किसी समय तो व्यवहारनय (अभूतार्थनय) के आश्रय से होता है और किसी समय निश्चयनय (भूतार्थनय) के आश्रय से होता है, परन्तु धर्म तो

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नया: ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

हमेशा निश्चयनय अर्थात् भूतार्थनय के ही आश्रय से होता है (अर्थात् भूतार्थनय के अखण्ड विषयरूप निजशुद्धात्मा के आश्रय से ही धर्म होता है।) ऐसा न्याय पुरुषार्थसिद्धियुपाय के ५वें श्लोक में तथा श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रन्था गाथा ३११-१२ के भावार्थ में दिया गया है। इसलिए इस श्लोक नं २२५ का अन्य प्रकार अर्थ

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

करना ठीक नहीं है।

इस प्रकार श्री उमास्वामि विरचित मोक्षशास्त्र के प्रथम अध्याय की गुजराती टीका का हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ।

जिनवाणी स्तुति